

गंगा बेसिन में चीनी इकाइयों और एथेनाल इकाइयों में ताजे पानी की खपत में 50 प्रतिशत की कमी आई

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में एफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट ऑपरेशन एंड एफ्लूएंट एनालिसिस विषय पर दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन मंगलवार से शुरू हुआ। सेमिनार में उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बिहार,

हरियाणा सहित एथेनाल उद्योग के 80 से अधिक तकनीकी कर्मियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा कि पिछले 5 वर्षों में संस्थान प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और उद्योग द्वारा किए गए एकजुट प्रयासों के कारण गंगा बेसिन में स्थित चीनी इकाइयों और एथेनाल इकाइयों में ताजे पानी की



खपत में 50% की कमी आई है। उन्होंने कहा कि यह कमी और भी नीचे लाना है, इसके लिए अधिक तकनीकी हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

प्रोफेसर डी स्वेन ने उत्प्रेषण की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अपनाए जाने वाले एफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट के विभिन्न विन्यासों का

विवरण दिया। तकनीकी अधिकारी महेंद्र यादव ने स्वच्छ जल के स्थान पर उपयोग के लिए शुद्धिकरण के बाद अपशिष्ट जल की विभिन्न धाराओं के पुनर्चक्रण के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉक्टर विष्णु प्रभाकर श्रीवास्तव अनूप कुमार कनौजिया आदि लोग मौजूद थे।

नई तकनीक से चीनी मिलों में ताजे पानी की खपत 50 फीसदी कम

(आज समाचार सेवा) कानपुर, 11 अक्टूबर। नई तकनीक से चीनी मिलों में ताजे पानी की 50 फीसदी खपत कम की जा सकती है। इससे गंगा समेत अन्य नदियों में होने वाले प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है। इस दो दिवसीय कार्यशाला में निदेशक ने उत्तर प्रदेश के अलावा तमिलनाडु,



संस्थान कानपुर के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने वर्तमान में उपलब्ध अच्छी तकनीक और स्टैंडर्ड आपरेटिंग प्रोसिजर के बारे में जानकारी दी। डी स्वेन ने कहा कि मिलों में विभिन्न तकनीकी के द्वारा चीनी गुणों का उत्पादन किया जाता है। इसलिए इफ्लूएंट की गुणवत्ता के अनुसार ट्रीटमेंट प्लांट को डिजाइन करना चाहिए।

■ एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने आनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में दी जानकारी

महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बिहार व हरियाणा में स्थित चीनी मिलों के 80 से अधिक तकनीकी स्टाफ ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। आज एनएसआई में इफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट आपरेशन एंड इफ्लूएंट एनालिसिस पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय शर्करा

स्वच्छ जल के स्थान ट्रीटमेंट किए हुए अपशिष्ट जल का उपयोग करना चाहिए। डॉ. विष्णु प्रभाकर श्रीवास्तव ने कहा कि समय-समय पर ताजे पानी, अपशिष्ट जल, भूमिगत जल और पास के नदी व नाले के पानी का पीएच, बीओडी, टीएसएस आदि का विश्लेषण जरूर करना चाहिए।

एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट-ऑपरेशन एंड एफ्लुएंट एनालिसिस पर दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

कानपुर (नगर छाया समाचार)।

चीनी और एथेनॉल उद्योग के लाभ के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर द्वारा आयोजित एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट-ऑपरेशन एंड एफ्लुएंट एनालिसिस पर दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आज शुरू हुआ। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बिहार और हरियाणा आदि राज्यों के चीनी और एथेनॉल उद्योग के 80 से अधिक तकनीकी कर्मियों ने भाग लिया।

अपने उद्घाटन भाषण में, निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने प्रतिभागियों को उन लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी, जिनको परिकल्पना ताजे पानी की खपत को कम करने और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के दिशानिर्देशों के अनुसार उपवाह (एफ्लुएंट) को नियंत्रित करने के लिए की गई है। पिछले पांच वर्षों में संस्थान, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और उद्योग द्वारा किए गए एकजुट प्रयासों के कारण, गंगा बेसिन में स्थित चीनी



इकाइयों और एथेनॉल इकाइयों में ताजे पानी की खपत में 50 प्रतिशत की कमी आई है। हालांकि, इसे और नीचे लाने के लिए और अधिक तकनीकी हस्तक्षेप की

आवश्यकता है, जिसके सम्बन्ध में उनके द्वारा "Best Available Technologies" & "Standard Operating Procedure" की जानकारी दी गयी।

श्री डी. स्वेन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग ने अपनी प्रस्तुति में उपवाह (एफ्लुएंट) की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अपनाए जाने वाले एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट के विभिन्न विन्यासों का विवरण दिया। विभिन्न प्रसंस्करण तकनीकों द्वारा विभिन्न चीनी गुणों का उत्पादन किया जाता है और इसलिए एफ्लुएंट की गुणवत्ता के अनुसार एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट को डिजाइन करना आवश्यक है। उन्होंने प्रभावी संयंत्र संचालन को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक विभिन्न मानकों पर भी चर्चा की।

अन्य प्रस्तुतियों में श्री महेंद्र यादव, तकनीकी अधिकारी ने स्वच्छ जल के स्थान पर उपयोग के लिए शुद्धिकरण के

बाद अपशिष्ट जल को विभिन्न धाराओं के पुनर्चक्रण के माहत्व के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने चीनी और एथेनॉल उत्पादन के दौरान अपशिष्ट जल की गुणवत्ता और उपयोग के संभावित स्थानों के आधार पर उसके उपचार पर एक योजना प्रस्तुत की।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विष्णु प्रभाकर श्रीवास्तव ने समय-समय पर ताजे पानी, अपशिष्ट जल, भूमिगत जल और पास के नाले या नदी के पानी का पी.एच., बी.ओ.डी., टी.एस.एस. इत्यादि के विश्लेषण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें सटीक परिणामों के लिए प्रयोगशाला में इस तरह का विश्लेषण करके ऑनलाइन निगरानी प्रणाली की यथार्थता को जांचना होगा।

श्री अनुप कुमार कर्नोजिया, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी एवं संयोजक ने उद्घाटन दिवस की कार्यवाही का सारांश प्रस्तुत किया।

चीनी इकाइयों, एथेनॉल इकाइयों में ताजे पानी की खपत में 50% की कमी आई

■ चीनी इकाइयों, एथेनॉल इकाइयों में ताजे पानी की खपत में 50% की कमी आई

■ एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट - ऑपरेशन एंड एफ्लुएंट एनालिसिस पर दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

ब्रिटीएनए



कानपुर। चीनी और एथेनॉल उद्योग के लाभ के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर द्वारा आयोजित एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट - ऑपरेशन एंड एफ्लुएंट एनालिसिस पर दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आज शुरू हुआ। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बिहार और हरियाणा आदि राज्यों के चीनी और एथेनॉल उद्योग के 80 से अधिक तकनीकी कर्मियों ने भाग लिया।

अपने उद्घाटन भाषण में, निदेशक नरेंद्र मोहन ने प्रतिभागियों को उन लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी, जिनकी परिकल्पना ताजे पानी की खपत को कम करने और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के दिशानिर्देशों के अनुसार उपवाह (एफ्लुएंट) को नियंत्रित करने के लिए की गई है। पिछले पांच वर्षों में संस्थान, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और उद्योग द्वारा किए गए एकजुट प्रयासों के कारण, गंगा बेसिन में स्थित चीनी इकाइयों और एथेनॉल इकाइयों में ताजे पानी की खपत में 50% की कमी आई है।

हालांकि, इसे और नीचे लाने के लिए और अधिक तकनीकी हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जिसके सम्बन्ध में उनके द्वारा "Best Available Technologies" व "Standard Operating Procedure" की जानकारी दी गयी।

डी. स्वेन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग ने अपनी प्रस्तुति में उपवाह (एफ्लुएंट) की गुणवत्ता को

ध्यान में रखते हुए अपनाए जाने वाले एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट के विभिन्न विन्यासों का विवरण दिया। विभिन्न प्रसंस्करण तकनीकों द्वारा विभिन्न चीनी गुणों का उत्पादन किया जाता है और इसलिए एफ्लुएंट की गुणवत्ता के अनुसार एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट को डिजाइन करना आवश्यक है। उन्होंने प्रभावी संयंत्र संचालन को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक विभिन्न मानकों पर भी चर्चा की। अन्य प्रस्तुतियों में महेंद्र यादव, तकनीकी अधिकारी ने स्वच्छ जल के स्थान पर उपयोग के लिए शुद्धिकरण के बाद अपशिष्ट जल की विभिन्न धाराओं के पुनर्चक्रण के माहत्व के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने चीनी और एथेनॉल उत्पादन के दौरान अपशिष्ट जल की गुणवत्ता और उपयोग के संभावित स्थानों के आधार पर उसके उपचार पर एक योजना प्रस्तुत की।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विष्णु प्रभाकर श्रीवास्तव ने समय-समय पर ताजे पानी, अपशिष्ट जल, भूमिगत जल और पास के नाले या नदी के पानी का पी.एच., बी.ओ.डी., टी.एस.एस. इत्यादि के विश्लेषण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें सटीक परिणामों के लिए प्रयोगशाला में इस तरह का विश्लेषण करके ऑनलाइन निगरानी प्रणाली की यथार्थता को जांचना होगा।

अनुप कुमार कर्नोजिया, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी एवं संयोजक ने उद्घाटन दिवस की कार्यवाही का सारांश प्रस्तुत किया।

Training programme on ETP operation

PNS ■ KANPUR

Director, National Sugar Institute (NSI), Prof Narendra Mohan, while delivering his inaugural address at the two-day online training programme on "Effluent Treatment Plant (ETP) operation and effluent analysis" on Tuesday said this training programme was meant for the benefit of sugar and alcohol industry and apprised about the targets which had been envisaged for reducing fresh water consumption and subsequently controlling the effluent discharges as per Central Pollution Control Board guidelines.

Elaborating on "Best Available Technologies and Standard Operating Procedures," he said over the last five years due to cohesive efforts made by the institute, pollution control boards and industry, the fresh water consumption in sugar units and distilleries situated in Ganga basin had been successfully

brought down by 50 per cent conserving natural resources. He said however, more technological interventions were required to bring it down still further.

The programme is being attended by more than 80 technical personnel from sugar and alcohol industry from the states of Uttar Pradesh, Tamil Nadu, Maharashtra, Himachal Pradesh, Bihar and Haryana.

In his presentation, Prof D Swain, Sugar Engineering gave details about various configurations of Effluent Treatment System to be adopted considering the quality of effluent.

He said different sugar qualities were produced by different processing techniques and thus it was essential to design effluent treatment plant in accordance with input effluent quality. He discussed various parameters required to be controlled for efficient effluent plant operation.

Technical Officer Mahendra Yadav later gave details about the importance of re-cycling of various streams of waste waters after due purification for use as a replacement of fresh water. He presented a scheme on treatment of waste waters on the basis of their quality and possible places for application during sugar and ethanol production.

Associate Professor, University of Allahabad, Dr Vishnu Prabhakar Srivastava, stressed upon time to time analysis of fresh water, waste waters, underground water and water in the nearby drain or river for various parameters like pH, BOD, TSS etc. to assess the situation and to take remedial action.

He said one had to calibrate the online monitoring systems by carrying out such analysis in laboratory for accurate results. Assistant Professor of Sugar Engineering Anup Kumar Kanaujia conducted the inaugural day proceedings.

कानपुर।
किया
एखारी
न 11
मिति
होकर
किया
मालक
थाना
गकर्ता
रहने
वासी
ते हुए
शिक्षक
मलाश
म कि
बेरूद्ध
देश
दिशन
पराध
या के
गवार
थाना
। चेक
बेकिंग
हों से
गया।
बन्धी
वार्ता
करने
खड़े
बा के
दिग्धों
भाववी

त

गातार
में का
नबई-
वाली
वेभाग

दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

कानपुर, (पंजाब केसरी): चीनी और एथेनॉल उद्योग के लाभ के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर द्वारा आयोजित "एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट ऑपरेशन एंड एफ्लुएंट एनालिसिस" पर दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आज शुरू हुआ।

इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बिहार और हरियाणा आदि राज्यों के चीनी और एथेनॉल उद्योग के 80 से अधिक तकनीकी कर्मियों ने भाग लिया। अपने उद्घाटन भाषण में, निदेशक नरेंद्र मोहन ने प्रतिभागियों को उन लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी, जिनकी परिकल्पना ताजे पानी की खपत को कम करने और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के दिशानिर्देशों के अनुसार उत्प्रावह (एफ्लुएंट) को नियंत्रित करने के लिए की गई है।

पिछले पांच वर्षों में संस्थान, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और उद्योग द्वारा किए गए एकजुट प्रयासों के कारण, गंगा बेसिन में स्थित चीनी इकाइयों और एथेनॉल इकाइयों में ताजे पानी की खपत में 50% की कमी आई है। हालांकि, इसे और नीचे लाने के लिए और अधिक तकनीकी हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जिसके सम्बन्ध में उनके द्वारा जानकारी दी गयी।

डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग ने अपनी प्रस्तुति में उत्प्रावह (एफ्लुएंट) की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अपनाए जाने वाले एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट के विभिन्न विन्यासों का विवरण दिया। विभिन्न प्रसंस्करण तकनीकों द्वारा विभिन्न चीनी गुणों का उत्पादन किया जाता है।

बै

फर्रूख
मीणा
जनपद
थाना
चेकिंग
के द
थानों
अपने
की बैं
सीसीटी
वहीं, 1
के दौर
समस्त
व्यवस्
चेकिंग
दल ड
नंबर
जागरू
में आ
को स

कानपुर
जिला
बिरहर
नव नि
निरीक्ष
जिला
निर्देशि
में गौश
का क
हुए शे
पर पू
गौशाल
दिये।
निर्देशि

चीनी और एथेनॉल उद्योग में ताजे पानी की मांग घटी

अमृत विचार, कानपुर। देश भर की चीनी मिलों और एथेनॉल उद्योग में ताजे पानी की खपत को कम किया जा रहा है। इसको लेकर तकनीकी जानकारी के लिए मंगलवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में मिल के प्रतिनिधियों और कर्मचारियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया गया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट-ऑपरेशन एंड एफ्लुएंट एनालिसिस पर दो दिवसीय कार्यशाला में उप्र के अलावा, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बिहार और हरियाणा आदि राज्यों के चीनी और एथेनॉल उद्योग के 80 से अधिक तकनीकी कर्मियों ने भाग लिया। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि गंगा बेसिन की चीनी और एथेनॉल इकाइयों में ताजे पानी की खपत में 50 फीसद की कमी आई है। इसे और नीचे लाने की तैयारी चल रही है। इलाहाबाद विवि के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विष्णु प्रभाकर श्रीवास्तव ताजे पानी, अपशिष्ट जल, भूमिगत जल और पास के नाले या नदी के पानी का पीएच, बीओडी, टीएसएस आदि के विश्लेषण पर जोर दिया। डी. स्वैन, तकनीकी अधिकारी महेंद्र यादव, अनूप कुमार कनौजिया भी रहे।